Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7), 1442–1446

CULTURAL GLIMPSE OF DHANGAR AND GAVDA COMMUNITIES OF GOA

गोवा के धनगर और गावडा जमातियों की सांस्कृतिक झलक

Vaishali Sanjay Naik [1]

[1] Associate Professor, Indian Language Department Dhempe College of Arts and Science, Miramar-Panaji- Goa 403001, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i7.2024.5776

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Dhangar community lives in huts on the plain land of the mountainous regions. They reside in the Amthane villages of Goa's Kankon, Sange, Sattari and Pedne districts. The language of the Dhangar community settled in Goa is a mixture of Padhe, Kokanastha and Kaphade Brahmin dialects. Dhangar is an independent and culturally distinct community. The Dhangar community has a rich tradition of traditional folk songs, which reflect their culture and lifestyle. In this research article, the culture and lifestyle of the Dhangar community can be seen through folk songs.

Hindi: धनगर जमात पर्वतीय क्षेत्रों की समतल भूमि पर झोपड़ियों में रहती है। गोवा के काणकोण, सांगे, सत्तरी और पेडणे जिलों के आमठणे गाँवों में इनका निवास है। गोवा में बसनेवाले धनगर जमातियों की भाषा में पधे, कोकणास्थ और कप्हाडे ब्राह्मण की बोली का मिश्रण मिलता है। धनगर एक स्वतंत्र और सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट जमात है। धनगर समुदाय में पारंपरिक लोकगीतों की समृद्ध परंपरा है, जो उनकी संस्कृति और जीवनशैली को दर्शाते हैं। इस शोध आलेख में धनगर जमाति की संस्कृति और जीवनशैली को लोकगीतों के माध्यम से देख सकते हैं।

Keywords: Dhangar, Folk Culture, Lifestyle धनगर, लोकसंस्कृति, जीवनशैली

1. प्रस्तावना

गोवा में बसनेवाली जाति -जमातियों में धनगर का विशिष्ट स्तान दृष्टिगोचर होता है। धनगर जमात पर्वत के ऊपर समतल भूमि पर झोपड़ियों में निवास करती है। गोवा के काणकोण, सांगे, सत्तरी और पेडणे में आमठणे गाँव इन जिलों में धनगर लोगों का निवास है। धनगर जमात के लोग एक समूह में बसते हैं। बकरी और भैंस पालना इनका प्रमुख उद्योग है। इनकी वेश भूषा एकदम सीधी-सीधी होती है। कमर पर लंगोट, कंधे पर कम्बल, माथे पर विविध प्रकार की पगड़ी, हाथों में धातु का कड़ा पहने, हाथों में लाठी और बायें कान में आभूषण पहनते हैं, और स्त्रियाँ नौ गज की (नउवारी) साड़ी घुटनों तक पहनती हैं। धनगर एक स्वतन्त्र पर सांस्कृतिक दृष्टि से एकदम अलग जमात है। उनकी बोलचाल की भाषा में गोवा के पधे, कोकणास्थ और कप्हाडे ब्राह्मण की बोली भाषा के मिश्रित रूप हैं। यहाँ धनगर जमात में गाये जाने वाले कुछ विवाह संस्कार की एक विधि का उदाहरण प्रस्तुत हैं।

हल्दी लगाते वक्त सुहागनों और वर के माता द्वारा गाया जानेवाला गीत इसप्रकार है:

"नवऱ्याच्या बापानी झोपली शेत
नवप्याच्या आईनी येचील्या शेनी ग शेनी
शेनी ग येचून भाजीला मळ हो भाजीला मळा
मळका नागरुन परात झाल हो परात हो

नवऱ्याच्या आईनी बोलवल्या सवासीनी हो बालावल्या
पाच जनी सवासिनी हडाई लावू हो हडाई लावू हो
हडाई लावून मरातू झाली हो मरातू झाली हो
मेघुराया गडगडी आबाळ गडगडी धाराची सोडी
मेघुराया मइन वलिन हडाई कोमोशि झाली
माझी हडाई एक एक पाना हो एका एक पाना हो
हडाई पोनका पाना हो पोनक पाना हो
अकराव्या पाना हडाई हाडायची झाली काढायची झाली
अकराव्या पाना हडाई काठिशी झाली हो काठीशी झाली
नवऱ्याच्या बाप हडाई नधिला बोगारा घरी हो बोगारा घरी
नवऱ्याच्या बापानी इइला साको हो इनिला साको हो
नवऱ्याच्या आईनी बोलावल्या सुवासिनी
नव-याच्या बापानी केली खोरी गे खपुळी हो केली खोरी
माझी हडाई काढून झाली ग काढून झाली
नवऱ्याच्या आईनि हडाई निरकूट केली ग निरकूट केली
नवऱ्याच्या बहिनीनी हडाई सूटिक केली ग सूटिक केली
नवऱ्याच्या बाप निद्याला हो बोगारा घरी बोगारा घरी
बोगार बापा मडकी का घडवी ही मडकी का घडवी
नवऱ्याच्या बापानी भरिल्या मडक्या हो भरिल्या मडक्या
नवऱ्याच्या बापानी सोडिवल्या हडाई हो सोडविल्या हडाई
माझी हडाई उकड घाली उकडत घाली

धनगर समाज में कई सारी विधियों मनायी जाती हैं। लेकिन उनके विवाह समारोह का यह एक दीर्घ समारोह है। उनके यहाँ हलदी विधि से लेकर वर-वधू के साथ आगमन तक कई गीत गाये जाते हैं। शादी की हर विधि पर ये गीत आधारित होते हैं। हलदी गीत में हल्दी की शुरुआत से पहले किस प्रकार हल्दी बनायी जाती है, कौन लगाता है। सबका विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है। इन गीतों को 'हडाई' कहा जाता है। इस गीत में कहा गया है कि वर के माता-पिता अपने खेतों में बैलों के हल से खेत कसता है। वर की माँ सारे जंगल में घूमकर सूखा गोबर इकट्ठा कर सारे जमीन पर जलायी जाई है। सारी जमीन कसकर हल्दी के लिए तैयार की जाती है और सुहागिन स्त्रियों द्वारा हल्दी लगायी जाई है। यह सारा काम बारीश आने से पूर्व किया जाता है। इस लोकगीत में बारीश आने का उल्लेख इस तरह किया है "मधुराया गढगढी, आभाळ गढगढी धाराची सोडी।" सारी धरती भीग जाती है। हल्दी में अंकुर आते हैं। हल्दी का पूरी तरह से विकास होता है और उसे खोदकर निकालने का समय होता है। उस वक्त वर के पिता बोगार (लुहार) के पास (कुदल) खोरे ले जाते हैं। और फिर उसके सहारे हल्दी खोदी जाती है। वर की माँ हल्दी पीसकर उसे घड़े में भरकर उबालती है। इस प्रकार हल्दी तैयार की जाती है। उसे वर के शरीर पर लगाने तक का वर्णन गीत में किया गया है। हल्दी लगाते वक्त घर के सभी संगी-सम्बन्धियों की आवभगत अच्छी तरह की जाती है।

विवाह में शर्त लगाने का खेल-
राजा की रानी
राजाची राणी, राजाची राणी पलंगार बैसोनी
मागतेशी को केनाळ फूल हो मागनेशी केनाळ फूल
साखळेशरा हिडलो बाजार मिळत नाय केनाळ फूल हो
मिळतनाय केनळ फुल
राजाची राणी- राजाची राणी पलंगार बैसोनी

मागतेसी केनाळ फूल-2
डिचोली शहर हिड़लो बाजार मिळत नाय केनाळ फूल हो
राजाची राणी
भागतेशी
म्हापशा शार हिडलो बाजार मिळतनाय केनाळ फूल हो
मिळतनाय केनाळ फूल
राजाची राणी

मागतेशी केनाह फूल हो मागतेशी केनाळ फूल ।।

विवाह के अवसर पर शर्त लगाने का खेल भी देखने को मिलता है। विवाह होने के बाद जब वधू-वर समेत ससुराल जाने लगती है, तब वर को छोड़ने के लिए वधू अपनी सहेलियों के साथ रूठ जाती है। इसी का वर्णन इस गीत के माध्यम से किया है। इस गीत में राजा यानी वर अपनी रूठी रानी वधू को समझाने की कोशिश करता है कि केनाळ फूल, जो बालों में लगाया जाता है, वह मैं तुम्हें दे नहीं सकता क्योंकि मैंने उसे सारे बाजार में घूमकर देखा, लेकिन मुझे नहीं मिला। ऐसे में तुम अपना गुस्सा छोड़कर मेरे साथ चली आओ। इस पर वर को और छेड़ते हुए वधू आगे कहती है कि मैंने बालों की चोटी पीठ पर इसलिए छोड़ी है कि उस पर केनाळ फूल लगाऊँगी। मैंने माथे पर कुकुम का तिलक लगाया है. गले में मोतियों का हार है, कानों में बालियाँ हैं और नयी साड़ी (शालु) पहले तुम्हारी राह देख रही हैं कि तुम केनाळफूल लेकर आओगे। वधू की बातें सुनकर वर फिर कहता है कि आज तुम मेरे साथ सारा गुस्सा छोड़कर चली आना क्यों नहीं तो तुमने जो नयी साड़ी पहनी है वह पुराना हो जायेगा। वह उसकी सखियों से कहता है कि, तुम सब उसको समझाकर मेरे साथ भेज दो। इसी प्रकार इस छेड़खानी में खेल चलता रहता है। वधू वर के साथ अन्त में चली जाती है। इसका विस्तृत वर्णन किया है।

होली रचते वक्त (शिमगोत्सव)

शिगमोत्सव धनगरों के जीवन का एक विशिष्ट उत्सव है। यह उत्सव एक विशिष्ट रूप में वह मनाया करता है। शिगमोत्सव के पहले दिन होळी (होली) जलायी जाती है। इस गीत में होली के रचना प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। और इसके पीछे के उद्देश्य का भी उल्लेख किया गया है।

रचली होळी बा,
रचली होळी
बाधली शिडी बा, बाधली शिडी
शिडीवर चढोनि रचली होळी बा-2
चवकोनी चवकोनी
होळीदेव मानाचा रे बा, होळदेव मानाचा
हासा हासा होळदेव मानाचा
हिडबा घेतो पानाचा रे बा
हिडवा घेतो पानाचा
खड़ाबा घेतो धुपाचा रे बा, खड़ाबा घेतो धुपाचा
आब्याचा पान आंबट रे बा
आब्याचा पान आबट
होळदेव तुक्याबी दडवान रे बा
होळदेव तुक्याबी दडवान
होळदेव तुक्या बी रतवान रे बा
होळदेव तुक्या रतवान
वाटेवयल्या वडाची कउणी सयाबा

वाटेवयल्या वडाची कोउणी सया
त्याका एक नर आली रे बा
त्याका एक नर आली।

शिगमोत्सव के पहले दिन गाँव के सभी लोग माडपर स्थल पर जमा होते हैं और होली रची जाती है। धनगनर समाज में होली रचने की प्रक्रिया कुछ ऐसी है। होली में पेड़ से तोड़ी गयी लकड़ियों को चौकोन रूप में रची जाती है। जो बहुत ऊँची होती है। इसलिए यहाँ पर सीढ़ी की उपमा दी गयी है। क्योंकि सारी रात उन्हें इस होली के प्रकाश में जगना होता है। इसके वह पहले पान-सुपारी से मानवंदना करता है, उसमें धूप डाला जाता है और आम के पत्तों की टहनी बाँधी जाती है। इस प्रकार उस होली जलायी जाती है। रातभर जगने के पीछे, उनका विश्वास है कि, देवचार (अमानवी शक्ति देवता) इस रात को किसी न किसी का छिपाकर रखता है। यह देवता (देवचार) उस वड़ के पेड़ पर बसा हुआ है जो इस होली के जलने से प्रसन्न हो जाता है और उनका जीवन सुरक्षित रहता है, इसलिए होली को रातभर जलाये रखने की उनकी कोशिश रहती है। अगर किसी आदमी को छिपा लिया तो वह जिन्दा नहीं बच सकता था। उसके बर्ताव में बदलाव आता है। इसीलिए विशालरूप में होली की रचना की जाती है। जिसका चित्रण शिगमोत्सव के गीत में मिलता है।

दशहरे के आठवें दिन से लेकर यानी जागरण के दिन से लेकर दसवें दिन तक यानी की जाने वाली घाइच्या नाम की आरती-

"हार हार चांम्बला
घुळियारच्या घुळोबाच्या नावे चांम्बला
पंढरपूरच्या विठोबाच्या नावें चॉम्बला
माळसे पंढरीच्या नावें चॉम्बला
जन मालच्या नावे चांम्बला
टेकडयाच्या भैरीच्या नावे चांग्बला
कन्नावाघेच्या नावे चांम्बला
पाठवडयाच्या जनाच्या नावे चांम्बला
पंढरपूरच्या पांडूरंगाच्या नावे चांम्बला
म्यान्याच्या नावे चांम्बल
भरल्या भांडाच्या नावे चांम्बला
हार हार चांम्बला

धनगरों के जीवन में प्रकृति निसर्ग देवता के प्रति विशेष स्थान होता है। अपना जीवन सुखी / खुशहाल रहे इसलिये उसकी कोशिश होती है। इसलिए सालभर अनेकों उत्सव, त्योहार वह मनाता है। उसी में एक है 'दशहरा' जो उसके लिए खुशियों का उपहार लेकर आता है। यह त्योहार यानी उनके जीवन की खुशहाली होती है। प्रकृति के साये में उसका जीवन अर्थ ग्रहण करता है। निसर्ग देवता के इस ऋण को याद रखते हुए, वे उसके नाम से जागरण करते हैं। दशहरे के आठवें दिन से यानी जागरण काल से दसवें दिन तक ईश्वर के नाम का जयजयकार किया जाता है। अपने प्रत्येक शुभकार्य के अवसर पर या, संकटकाल के अवसर पर प्रसन्न होते भगवान की जयजयकार की जाती है। परम्परा के अनुसार आरती में दस देवताओं के नाम का जयजयकार किया जाता है। इस प्रकार की आरती को 'धाई' कहा जाता है। 'धाई' नाम दस देवताओं के नामों के उल्लेख स्वरूप आया है। इस आरती के प्रारम्भ में पर्वत, शिखरों को भार संभाले हुए हरी-हरी घास उपलब्ध करने वाले पर्वत के 'भैरु' देवता का नाम लेकर, जयजयकार किया गया है। हमेशा गाय, भैंसों. बकरी आदि जानवरों के रक्षणकर्ता और उसके पालन-पोषणहार को कृष्ण, कान्हा, ग्वाल. मुरलीधर के नाम से पुकारा जाता है। उनका गुणगान किया जाता है। अन्त में पृथ्वी यानी आसन और आकाश यानी मंडप जिसके निर्माण कर्ता की लीला का वर्णन किया गया है। भरल्या मांडाच्या नावे चांगभलं इस उक्ति के साथ आरती समाप्त होती है। इस पूरी आरती में ईश्वर को ही जीवन का निर्माणकर्ता मानकर तथा अपने अस्तित्व तक उसकी कृपादृष्टि रहने की आकांक्षा की जाती है।

गावडा, कुणबी भी गोवा की एक आदिवासी जमात है। बा.द. सातोस्कर के अनुसार ये गावडा लोग प्रोटो-ऑस्ट्रेलाइड वंश के हैं और आर्यों से पूर्व गोवा में आये थे। इस गावडा जमात ने बस्ती की स्थापना कर गाँवों का निर्माण किया। इसलिए इन्हें मूल संस्थापक माना जाता है। गाँव बसाने वाले 'गावडे' माना जाता है। इसी जमात ने पंचायत पद्धति की शुरुआत भी की। इनका प्रमुख काम खेती करना है। इस जमात के थोड़े लोग मीठ (नमक) पैदा करने का उद्योग करते हैं उन्हें मीठ-गावडे कहा जाता है। इन्हीं को कुंळबी, गावकर, वेलीप, नामों से भी जाना जाता है। पुरु, लंगोटी और माथे पर

कपड़ा बाँधते हैं, कंधे पर कम्बल लेते हैं। तथा इनकी स्त्रियाँ देठली पद्धति से साड़ी पहनती हैं। हिन्दू और क्रिश्चियन गावडा में ज्यादा फर्क नही होता, सिर्फ कुछ धार्मिक संस्कारों में भिन्नता पायी जाती है। यहाँ विवाह के समय गाये जाने वाले गीत का उदाहरण प्रस्तुत है।

"यजमानमी बाये गे तु गे कित्याक वोगी।
रुपयांची पोगी काय रिती झाली।
जाल्यार जाली गे। करु नाका चिंता।
घोड्यार बसून यता तुजी राम-सीता ।।
आज बापा दिता म्हणशी फाल्या बापा ना म्हणशी।
रुमडाचेर फूला काय बापा गांजीयशी ।।'

यजमान स्त्री तुम क्यों चुप हो, पैसों की कमी हो गयी। तो क्या हुआ। चिन्ता मत करो। घोड़े पर बैठकर तुम्हारे राम-सीता आ रहे हैं। आज हे पिता, देने का वादा करोगे, कल मुकर जाओगे। रुमडे (गुलर) के फूल के लिए बहाना मत करो।

निश्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि गोवा में बसनेवाली यह जाति-जमातियाँ आज भी अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं को लिए जी रही हैं। बदलते परिवेशानुसार तथा शिक्षा के प्रसार ने आज उनकी जीवनशैली में परिवर्तन नजर जरूर आता है, लेकिन जहाँ विधि-विधानों का सवाल है, आज भी शादी-ब्याह में पारंपारिक गीतों का प्रचलन दिखायी देता हैं।

संदर्भ सूची

भोसले.द.ता, लोकसंस्कृतिःस्वरूप आणि विशेष, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे 2004.
भागवत दुर्गा, भारतीय लोकसाहित्य की रूपरेखा, भूमिका प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991
सोतास्कर. बा.दा, गोमंतकः प्रकृति आणि संस्कृति, शुभदा सारस्वत, पुणे, 1979
डॉ. नाईक वैशाली, लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2013